शोध मंथन Vol. XIV No.IV Oct.-Dec. 2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:shodhmanthan.anubooks.com*

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं अध्यापक शिक्षा

प्राप्तिः 18.12.2023
स्वीकृतः 24.12.2023

90

डॉ० कृष्ण कुमार सिंह
प्रो० एवं विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग
रामनगर पी०जी० कॉलेज
रामनगरबाराबंकी उ०प्र०

नौमी लाल
शोधार्थी, एम०ए०, एम०एड०, नेट
रामनगर पी०जी० कॉलेज, रामनगरबाराबंकी
ईमेलः *nawmilalbharti2014@gmail.com*
(संबद्ध डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय
अयोध्या उ०प्र०)

सारांश

शिक्षक शिक्षा एक ऐसी शैक्षिक प्रक्रिया है जिसमें ज्ञान तथा मूल्यों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढी के मध्य हस्तांतरित किया जाता है। शिक्षकों को भारतीय मूल्यों, ज्ञान व परम्पराओं तथा विभिन्न भाषाओं से परिचित कराना है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षक–शिक्षा के लिए अच्छे शिक्षको की आवश्यकता होती है तथा भावी शिक्षकों में अच्छे स्वभाव का विकास, मानवीय मूल्यों का निर्माण किया जा समता हैं शिक्षको की शिक्षा एवं शिक्षाशास्त्र में नवीनतम प्रगति से परिचित कराकर शिक्षकों में बहुविशयक दृष्टिकोण विकसित किया जा सकता हैं। शिक्षक–शिक्षा नई पीढी को आकार देने वाले शिक्षको के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। अध्यापक शिक्षा के द्वारा शिक्षकों में सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक पहलुओं के अतिरिक्त लोकतांत्रिक मूल्यों को ग्रहण करना, राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में शिक्षक की आधुनिक तथा बदलती हुई भूमिका का निर्वहन करने की योग्यता व दक्षता को ग्रहण करने के लिए शिक्षित करती हैं। अध्यापक शिक्षा एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि एक मिशन हैं।

मुख्य शब्द

राष्ट्रीय शिक्षानीति, अध्यापक शिक्षा, शिक्षण–प्रशिक्षण, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, शिक्षक–शिक्षार्थी, समावेशी शिक्षा, बहुविषयक शिक्षा।

प्रस्तावना

कहा जाता है कि " गुरू बिन ज्ञान न होई " अर्थात् बिना गुरू के ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता है। गुरू ही किसी व्यक्ति को मार्ग बताता है, रास्ता दिखाता है, लक्ष्य तक पहुँचाता है। बिना गुरू के कोई भी व्यक्ति आगे बढ़ ही नहीं सकता। किसी देश का प्रारब्ध उस देश की कक्षाओं में निर्मित होता है। यह निश्चित है कि इस स्थिति मे शिक्षक ही उस प्रारब्ध के शिल्पकार होते हैं। भारतीय परंपरा में शिक्षक अर्थात गुरू को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। निम्नलिखित श्लोक से स्पष्ट है कि गुरू को ईश्वर से भी बड़ा माना गया है

"गुरुर्ब्रहमा गुरुर्विष्णुः , गुरूर्देवो महेश्वरः
गुरूः साक्षात् परंब्रह्म तस्मै श्री गुरूवे नमः"

अर्थात् गुरू ही ब्रह्मा है, गुरू ही विष्णु है, गुरू ही साक्षात् परम ब्रह्म है, ऐसे गुरू को प्रणाम है। प्राचीन काल में शिक्षक को जितना सम्मान या उच्च पद प्राप्त था उतना सम्मान वर्तमान में नहीं रहा है। इसके कई कारण हो सकते हैं। अध्यापक और छात्रों के संबंधों में उतनी मधुरता नही रही है। वर्तमान में अध्यापक शिक्षा की प्रणाली इतनी प्रदूशित या गंभीर हो गयी है कि अधिकांश 'अध्यापक शिक्षा संस्थान' अपर्याप्त शिक्षकों से चल रहे हैं तथा कक्षाएँ भी संचालित नहीं हो पाती हैं अधिकांश विद्यार्थी अनुपस्थित ही रहते हैं तथा अधिकांश शिक्षक अप्रशिक्षित ही होते हैं या क्वालीफाइड ही नहीं होते हैं। जिसके कारण गुणवत्तापरक शिक्षा छात्रों को प्राप्त नहीं हो पाती है। उसके बावजूद छात्र परीक्षा में बैठकर आसानी से पास हो जाते है। और वही विद्यार्थी एक न एक दिन शिक्षक भी बन जाते हैं। इस प्रकार के आधे अधूरें यत्नों से बनें शिक्षक न तो शिक्षण वृत्ति के प्रति निष्ठावान रह पाते है और न ही शिक्षण वृत्ति की मर्यादा एवं गुरुता को समझ पाते हैं। कहने को तो वर्तमान समय में अधिक संख्या में बच्चे उच्च शिक्षा को प्राप्त कर रहे हैं, परंतु उनमें अपेक्षित मनवीय मूल्यों का विकास तथा नैतिकता का विकास व सांवेगिक विकास पर्याप्त मात्रा में नहीं हो पाता है। अतः नई शिक्षा नीति 2020 के द्वारा वर्ष 2030 तक शैक्षिक रूप से सुदृढ़ एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम पूर्ण रूपेण क्रियान्वित करने की योजना एक सराहनीय कदम है।

बहुविषयक संस्थान अथवा ऐसे विश्वविद्यालय जहाँ विभिन्न विषयों के विभाग है, वहाँ अध्यापक शिक्षा का संचालन अधिक अच्छे तरीके से किया जा सकता है। अध्यापक शिक्षा के विद्यार्थियों के लिए शिक्षण अभ्यास एवं विद्यालय अनुभव कार्यक्रम एक चुनौती के समान है वर्तमान में अध्यापक शिक्षा संस्थानों की संख्या में अनियोजित व अनियंत्रित वृद्धि हुई है, इसके परिणाम स्वरूप विद्यार्थियों को उचित विद्यालय उपलब्ध नहीं हो पाने के कारण शिक्षण अभ्यास आदि के लिए पर्याप्त अवसर नहीं मिल पाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में निजी व सार्वजनिक विद्यालयों को एक साथ काम करने की बात कही गयी हैं, जिससे भावी शिक्षक उन विद्यालयों में शिक्षण अभ्यास के साथ–साथ सामुदायिक कार्यों का अनुभव प्राप्त कर सकेंगें, यह एक अच्छी संकल्पना है। लेकिन इसके क्रियान्वयन की अनेक चुनौतियाँ भी हैं। एक सफल क्रियान्वयन के लिए गंभीर व ईमानदार प्रयत्न किये जाने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी द्वारा अध्यापक शिक्षा में भाषाई व सांस्कृतिक विविधता को ध्यान में रखा जाना चाहिए तथा प्रतिभाशाली विद्यार्थियों एवं संकाय सदस्यों को अध्यापक शिक्षा की ओर आकृष्ट करने, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं सेवारत शिक्षकों का संकाय सदस्यों के ज्ञान वर्धन हेतु विभिन्न प्रकार के ऑनलाइन व ऑफलाइन कार्यक्रमों का गंभीरता से क्रियान्वयन एवं सलाह के लिए एक "राष्ट्रीय मिशन" की स्थापना का संकल्प निश्चित ही एक सराहनीय कदम है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में अध्यापक शिक्षा की संरचना में आमूल–चूल परिवर्तन को अभीष्ट माना गया है। अध्यापक शिक्षा की नवीन संरचना में उच्चतर शिक्षा की संरचना के सापेक्ष माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के लिए पाठ्यक्रम में लचीलेपन का विशेष ध्यान रखा गया है। नयी शिक्षा नीति 2020 में विद्यालयी शिक्षा के बाद चार वर्षीय बी0एड0 पाठयक्रम को लागू करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया हैं। वहीं स्नातक उत्तीर्ण छात्रों के लिए 2 वर्शीय बी0एड0 पाठयक्रम का

प्रावधान किया गया है। तथा नवप्रस्तावित 4 वर्षीय स्नातक उत्तीर्ण विद्यार्थियों के लिए 1 वर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम का प्रावधान किया गया हैं। उच्चतर शिक्षा व्यवस्था में यह बदलाव निश्चित रूप से स्वागत योग्य निर्णय है। वर्ष 2030 तक निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के उपरांत संरचनात्मक रूप से अध्यापक शिक्षा के अधिकांश प्रावधान अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेंगें, ऐसी आशा एवं विश्वास है। भारत में ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता हैं जिसमें वैश्विक ज्ञान परंपरा, लोक संस्कृति, मानवीय व सामाजिक मूल्यों आदि के विकास व संवर्धन के प्रति भी सजग व सचेत हो। भारत में अनेक भाषा–भाषी एवं अनेक संस्कृतियों के लोग निवास करते हैं, यहाँ विविधता में एकता है। शिक्षा के द्वारा लोंगों में काफी जागरूकता तथा गतिशीलता भी बढ़ी है। जिसका प्रभाव सामाजिक संरचना पर भी पड़ा है। वर्ष 1968 एवं 1986 की शिक्षा नीतियों में समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षकों का निर्माण एवं वृत्तिक नैतिकता सापेक्ष मानदंड निर्धारण की संकल्पना तो की गई लेकिन इन सब का जो परिणाम है, वह सब हमारे समक्ष हैं। सर्वविदित यह है कि जिन लक्ष्यों के साथ राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद की स्थापना की गयी थी, यह निकाय न सिर्फ उन लक्ष्यों को प्राप्त कर पाने में पूर्णतः असफल रहा है बल्कि इसने अध्यापक शिक्षा व्यवस्था को अव्यवस्था एवं नकारात्मकता की ओर धकेल भी दिया है।

अध्यापक शिक्षा से संबंधित विचार–विमर्श देश में लंबे समय से चलते आ रहें हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में विभिन्न आयोगो एवं समितियों का गठन किया गया एवं नीतियाँ भी बनायी गयी और उनका क्रियान्वयन भी होता रहा परन्तु समय–समय पर विभिन्न प्रयत्नों के उपरांत भी अध्यापक शिक्षा की संरचना में कोई सुधार नहीं हो सका। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में विद्यालयों की संख्या में मात्रात्मक वृद्धि तो हुई लेकिन गुणात्मक वृद्धि में कोई सुधार या परिवर्तन नहीं हो सका। विगत कुछ दशकों में शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच पारस्परिक विश्वास व पारंपरिक मूल्य आधारित संबंधों में कमी भी आयी। इसका मुख्य कारण यह है कि हमारी पाठ्यचर्या में भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल तत्वों तथा उचित मानवीय मूल्यों की अनदेखी हुई है और पाश्चात्य शिक्षा व्यवस्था ने लोगों के अन्दर हीन भावना पैदा कर दी है जिसके परिणाम स्वरूप विदेशी शिक्षा अच्छी तथा उच्च स्तर की लगने लगी है। तथा भारतीय शिक्षा परंपरा को हेय की दृष्टि से देखा जाने लगा है।

शिक्षक शैक्षिक सुधारों को आगे बढ़ाने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है, क्योंकि वे हस्तक्षेप, नवाचार और नीतियों को लागू करने के लिए जिम्मेदार है। शिक्षक ही अगलीं पीढ़ी के दिमाग को आकार देते हैं। हमारी शिक्षा प्रणाली का परिवर्तन हमारे शिक्षकों के कौशल और गुणों पर निर्भर करता है। पठन–पाठन की गुणवत्ता में सुधार के लिए प्रत्येक स्तर पर शिक्षकों के लिए एक केन्द्रित कार्य योजना बनाना आवश्यक है। हम शिक्षक–शिक्षा की गुणवत्ता को देखकर शुरूआत कर सकते है। नयी शिक्षा नीति में 4 वर्षीय एकीकृत बी0एड0 कार्यक्रमों की शुरूआत के साथ मौजूदा शिक्षा मॉडल में सुधार का प्रस्ताव दिया गया है। नयी शिक्षा नीति 2020 में लाइव शिक्षक प्रदर्शन को शामिल करके सामग्री, शिक्षाशस्त्र और छात्र सीखनें के सभी चरणों बुनियादी, प्रासंगिक मध्य और माध्यमिक तथा शिक्षक पात्रता परीक्षा के लिए परीक्षण सामग्री का पुनर्मूल्यांकन करके भर्ती प्रक्रिया को मजबूत करने की सिफारिश करता है। तेजी से बदलती हुई दुनिया के साथ तालमेल बिठानें के लिए शिक्षकों को जानबूझकर सीखने और खुद को उन्नत करने की जरूरत है।

नयी शिक्षा नीति 2020 में शिक्षकों के लिए अपार संभावनाएँ हैं जो भारत में बदलाव का सबसे बड़ा उत्प्रेरक है। वर्तमान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए शिक्षक के महत्व को सर्वाधिक योग देती है। शिक्षक प्रत्येक छात्र की विशिष्ट और अकादमिक तथा अन्य क्षमताओं का पूर्ण विकास करने में महती भूमिका अदा कर सकेगा। उच्चतर शिक्षा के क्षेत्र में नयी शिक्षा नीति ऐसी अपार संभावनाओं के द्वार खोल सकती हैं तथा व्यक्तियों को विपरीत परिस्थितियों के कुचक्र से छुटकारा भी दिला सकेगी। इसी कारण सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध होने की सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। प्राचीन ज्ञान परंपरा की भाँति शिक्षकों को आदर सम्मान तथा उच्चतर दर्जा प्राप्त हो सकेगा तथा देश को सर्वोत्तम राष्ट्र बनाने में शिक्षकों और छात्रों में प्रेरणा और सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में इसपर विशेष ध्यान दिया गया है तथा बी0एड0 पाठ्यक्रम में अध्ययन कर रहें छात्रों को मेरिट के आधार पर छात्रवृत्ति आवंटित करने का प्रावधान रखा गया है। बी0एड0 डिग्री के बाद स्थानीय क्षेत्रों में छात्रों को निश्चित रोजगार देने का प्रावधान भी शामिल है, जिससे कि यह विद्यार्थी स्थानीय क्षेत्रों के रोल मॉडल के रूप में तथा उच्चतर शिक्षकों के रूप में सेवा दे सकें।

ग्रामीण क्षेत्रों में छात्रों को पढ़ाने के लिए प्रमुख प्रोत्साहन स्कूल और उसके आस–पास स्थानीय आवास का प्रावधान भी रखा गया है। छात्रों का पूर्ण विकास केवल संबंधित विषय का अध्ययन करने से नहीं हो पाता है बल्कि छात्रों के पूर्ण विकास के लिए छात्रों को कला कौशल की शिक्षा, शारीरिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा तथा प्रतियोगी परीक्षाओं पर ध्यान होना भी आवश्यक है। विद्यालय के कार्यो के वातावरण और संस्कृतियों में आमूल–चूल परिवर्तन करने का प्राथमिक लक्ष्य है। वातावरण और संस्कृतियों में परिवर्तन होने से शिक्षक–छात्र, अभिभावक, प्रधानाध्यापक और अन्य सहायक कर्मचारी समावेशी समुदाय का हिस्सा बन सकेंगें, जिससे शिक्षक और छात्र दोनों का अधिकतम विकास संभव हो सकेगा। अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों को बहुविशयी संस्थानों में ही आयोजित किया जाना चाहिए, इसके लिए सभी बहुविषयक विश्वविद्यालयों के साथ–साथ सभी सार्वजनिक विश्वविद्यालय और बहुविषयक महाविद्यालय का लक्ष्य होगा कि वे अपने यहाँ उत्कृष्ट शिक्षा विभागों की स्थापना और विकास कर सके। शिक्षा में अनुसंधान को बढ़ावा देने के साथ–साथ मनोविज्ञान, दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र एवं भारतीय भाशाओं कला, संगीत, गणित, विज्ञान तथा साहित्य जैसे अन्य विशिष्ट विषयों से संबंधित शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए बी0एड0 कार्यक्रम भी संचालित किये जायेंगें, इसके साथ ही वर्ष 2030 तक सभी एकल शिक्षक–शिक्षा संस्थानों को बहुविषयक संस्थानों के रूप में बदलने की आवश्यकता होगी क्यूँकि उन्हें चार वर्षीय एकीकृत शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को संचालित करना ही होगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार शिक्षा विभाग में सदस्यों की प्रोफाइल में विविधता होना एक आवश्यक लक्ष्य है। सभी को पीएच्0डी0 धारक होना आवश्यक नहीं होगा, लेकिन शिक्षण के क्षेत्र में शोध के अनुभव को महत्ता प्रदान की जायेगी। सभी नये पीएच्0डी0 धारक चाहे वह किसी भी विषय में प्रवेश लें, ऐसा अपेक्षित होगा कि वह अपने डॉक्ट्रेट प्रशिक्षण अवधि के दौरान उनके द्वारा चुने गये पीएच्0डी विषय से संबंधित प्रशिक्षण शिक्षा अध्ययन लेखन में क्रेडिट आधारित पाठ्यक्रम अवश्य लें।

शिक्षक शिक्षा की समस्याएँ

अध्यापक शिक्षा की निम्नलिखित समस्याएँ हैं–

1. शिक्षा व्यवस्था में भ्रष्टाचार चरम पर है गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के लिए बुनियादी मानको को पूरा करने में असमर्थ है। शिक्षक शिक्षा प्रणाली में विश्वसनीयता प्रभावकारिता तथा उच्च गुणवत्ता बहाल करने के लिए इस क्षेत्र को पुनरोद्धार की तत्काल आवश्यकता है।
2. अध्यापक शिक्षा में छात्राध्यापकों के प्रवेश की विकट समस्या है। जो छात्र प्रवेश के लिए आते है उनमें शैक्षिक योग्यता की कमी पायी जाती है जिसके कारण उन्हें उचित रोजगार नहीं मिल पाता है प्रवेश के नियमों में बदलाव किया जाये तथा चयन के पाठ्यक्रम मे भी परिवर्तन किया जाना उचित होगा।
3. अध्यापक शिक्षा का पाठयक्रम अत्यंत संकुचित तथा पुराना एवं व्यावहारिक पक्ष पर कम बल देकर सैद्धांतिक पक्ष पर अधिक बल देता है। छात्रों की रूचियों, योग्यताओं, क्षमताओं, कल्पनाशक्ति, आकांक्षाओं तथा संवेगों पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है। पुरानी घिसी–पिटी शिक्षण विधि द्वारा छात्रों को सिखाया जाता है।
4. हमारे देश में सुयोग्य एवं अनुभवी शिक्षकों का अभाव है जिसके फलस्वरूप अध्यापक शिक्षा संबंधी कार्यो का संचालन सुचारू रूप से संपन्न नहीं हो पाता हैं। गुणवत्तापरक शिक्षा का अभाव पाया जाता है।
5. भारत में अध्यापक शिक्षा से संबंधित अनेक शोध कार्य हुए है लेकिन अच्छे अनुसंधान का अभी भी अभाव है। भारत में अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में शोध का कार्य अपनी शैशवावस्था में ही विद्यमान है। विदेशी अनुसंधानों को दोहराना भारतीय अनुसंधान कर्ताओं का प्रिय विशय रहा है। भारतीय परिवेश को ध्यान में रखकर अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में मौलिक अनुसंधान किये जाने की तत्काल आवश्यकता हैं, जिससे सामान्य एवं अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार किया जा सके।
6. छात्राध्यापकों के प्रशिक्षण में उद्देश्य तथा विधियों पर अधिक बल दिया जाता है वे स्वयं के विचारों तथा मूल्यों पर ध्यान नहीं दे पाते। जिसके कारण उनमें मौलिक चिन्तन का ह्रास होने लगता है जिसके कारण वे अपनी सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं को सुलझा नहीं पाते हैं। अतः अध्यापक शिक्षा में मानवीय मूल्यों तथा आवश्यकताओं का ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिए।
7. अध्यापक शिक्षा में शिक्षा की समस्या तीनों रूपों में व्याप्त है। प्रथम विश्वविद्यालय एवं कॉलेज के अन्य विभागों में पृथकता दूसरे शिक्षा विभागों का माध्यामिक स्कूलों से पृथकता तीसरा प्रशिक्षण महाविद्यालयों का प्राथमिक व माध्यमिक का परस्पर सहयोग का अभाव पाया जाता है। जिसके कारण एक विभाग के अध्यापक दूसरे स्तर के अध्यापकों को हेय की दृष्टि से देखने लगते हैं। अतः अध्यापक शिक्षा हेतु यह हितकर नही है।
8. शिक्षकों में व्यावसायिक कुशलता की कमी होने से शिक्षा का स्तर दिन प्रतिदिन गिरता जा रहा है। वर्तमान में प्रदर्शनात्मक विद्यालय का अभाव है। बिना प्रयोगशाला के विज्ञान विषय की शिक्षा दुर्लभ है, उसी प्रकार अध्यापक शिक्षा के लिए प्रदर्शनात्मक विद्यालय की अति आवश्यकता है।
9. शिक्षकों द्वारा परम्परागत भाशण विधि द्वारा प्रायः शिक्षण कार्य किया जाता है। छात्राध्यापक निष्क्रिय स्रोता बने रहते हैं। उनमें उचित दृष्टिकोण का विकास नहीं हो पाता हैं। भाषण

विधि के साथ–साथ वाद–विवाद, विचार–विमर्श, विचार गोष्ठी, सम्मेलन तथा वर्कशाप आदि का आयोजन किया जाना चाहिए।

10. वर्तमान में अध्यापक शिक्षा की परीक्षा प्रणाली बहुत ही दोश पूर्ण है। शिक्षक, छात्राध्यापकों से निष्पक्षता की भावना न रखकर द्वेश एवं पक्षपात करते हैं तथा अध्यापक स्वयं भी आपस में मनमुटाव रखते हैं जिससे छात्राध्यापकों पर बुरा प्रभाव पड़ता हैं।
11. छात्राध्यापकों को अच्छी तथा मौलिक पाठ्य–पुस्तके उपलब्ध नहीं हो पाती हैं। वे बाजार से निकृष्ट तथा सस्ती गाइड तथा नोट्स से पढ़ते हैं जिसके कारण शिक्षा का स्तर गिरता चला जा रहा है।
12. अध्यापक शिक्षा के लिए अध्यापन विषयों के चयन में काफी कठिनाई होती है वे उचित विषय का चुनाव नहीं कर पाते हैं तथा विद्यालय में अमुक विषय उपलब्ध न होने पर भी दूसरे विषय का चुनाव मजबूरी में करना पड़ता है।
13. छात्राध्यापक शिक्षण कार्य सावधानी पूर्वक नहीं करते हैं वे सिर्फ खानापूर्ति ही करते हैं तथा पाठ्य–योजना स्वयं न बनाकर नकल कर लेते हैं जिससे उनमें शिक्षण कौशल का विकास नहीं हो पाता है और जब वे स्वयं अध्यापक बनते हैं तो शिक्षण कार्य ठीक प्रकार से नहीं कर पाते हैं जिससे शिक्षा में गुणात्मक वृद्धि नहीं हो पाती है।

अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में सुधार हेतु सुझाव

1. वर्तमान भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल शिक्षा के उद्देश्यों एवं लक्ष्यों को निर्धारित कर छात्रों की रूचि, रूझानो आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए।
2. शिक्षकों का विभिन्न प्रकार की संस्थाओं में आदान–प्रदान तथा उनके मध्य पृथकता का अंत किया जाये।
3. शिक्षक शिक्षा संस्थाओं में क्षेत्रीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम तथा शिक्षण विधियों का निर्माण किया जाना चाहिए।
4. प्रशिक्षित शिक्षकों को रोजगार मुहैया कराया जाये जिन्हें रोजगार न प्राप्त हो सकें सरकार उन्हें निश्चित मानदेय प्रदान करे।
5. अध्यापक शिक्षा में शोध कार्य को बढ़ावा दिया जाये। जिससे अध्यापन में सैद्धांतिक पक्ष की अपेक्षा क्रियात्मक पक्ष पर अधिक बल दिया जा सके।
6. बढ़ते हुए शिक्षक शिक्षा संस्थाओं पर रोक लगायी जाये और शिक्षकों की जवाबदेही सुनिश्चित की जाये गैर मानक संस्थाओं को तत्काल बंद किया जाये।
7. जो शिक्षा संस्थान छात्राध्यापकों से अधिक शुल्क ले या शोषण करें उन्हें तत्काल बंद किया जाये।
8. राष्ट्रीय स्तर पर प्रवेश परीक्षा का आयोजन हो।

निष्कर्ष

अध्यापक शिक्षा से संबंधित विभिन्न आयोगों तथा समितियों ने अपने विचार प्रस्तुत किये। लेकिन उन विचारों को आज तक ठीक प्रकार से क्रियान्वित नहीं किया गया। अध्यापक–छात्रों का आदर्श रोल मॉडल होता हैं। अध्यापक छात्रों में अच्छें मानवीय मूल्यों का निर्माण करता हैं जिससे वह

एक सुयोग्य नागरिक बनता है। सेवापूर्व एवं सेवारत प्रशिक्षण की व्यवस्था होने के बावजूद भी शिक्षक–शिक्षा क्षेत्र में वाँछित विकास नहीं हो सका। शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में वर्तमान समय में अनेक समस्याएँ जन्म ले रहीं है जैसे प्रायोगिक कार्यो को सम्पन्न करने की समस्या, छात्रों के प्रवेश की समस्या, शिक्षक शिक्षा संस्थाओं की स्थिति सुधारनें की समस्या तथा छात्राध्यापकों के मूल्यांकन कार्य की समस्या, आदि समस्याएँ शिक्षक–शिक्षा से संबंधित है। अगर शिक्षक–शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न आयोगों एवं समितियों के सुझावों को ईमानदारी एवं कर्तव्य निष्ठा से क्रियान्वित कर दिया जाये तो न्यूनतम संसाधनों से शिक्षा के उद्देश्यों को आसानी से प्राप्त किया जा सकता है।

संदर्भ

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीतिः 2020 महत्व एवं चुनौतियों www.drishtiias.com
2. नई शिक्षा नीति 25 अगस्त www.drishtiias.com
3. http/hi.wikipidia.org/National Education.Policy.
4. www.kailasheducation.com अध्यापक शिक्षा की चुनौतियाँ एवं समस्याएँ।
5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) भारत सरकार नई दिल्ली।
6. राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या प्रारूप (2009) राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद, नई दिल्ली।